Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

"प्रेमचन्द के पत्रों का स्वरुप, प्रामाणिकता एवं प्रासंगिकता"

रूबी शर्मा

शोधार्थी, हिंदी विभाग मंगलायतन यूनिवर्सिटी अलीगढ़ (उत्तर-प्रदेश)

डॉ. सोनिया यादव

निर्देशिका, हिंदी विभाग मंगलायतन यूनिवर्सिटी अलीगढ़ (उत्तर-प्रदेश)

प्रस्तावना : पत्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक समवेग हैं, जो दूसरे के विचार पाकर उससे ताल-मेल या विरोध के लिये लिखे जाते हैं। दूसरी ओर अपने विचारों के सम्प्रेषण के लिए लिखे जाते हैं। कुछ रचनाकार पत्र लिखने में विशेष सावधानी बरतते हैं और वे अपने विचारों के गुम्फन के लिये सत्त प्रयत्नशील रहते हैं। निराला इस दिशा में विशेष जागरूक हैं। वे अपने पत्र लिखते समय कम से कम आठ-दस बार पत्र लिखकर फाड़ देते थे। इस दृष्टि से प्रेमचन्द को जागरूक पत्रों का पत्रीकार नहीं कहा जा सकता। वे अक्सर पत्र लिखते रहते थे और इस दिशा में भी सचेत थे कि उनके पास आये किसी पत्र का उत्तर दिये बिना न रह जाए। वे एक ही बार में अपनी बात कह देते थे। इस कारण प्रेमचन्द के पत्रों में भाषा की कलात्मकता, भावों का गुम्फन और अन्य किसी प्रकार की साज-सज्जा देखने को नहीं मिलती, और उसे सपाट बयानी कहा जा सकता है। उनके साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं पारिवारिक सभी प्रकार के विचार उनके पत्रों में साफ दिखाई पड़ते हैं। वह एक प्रकार की सपाट बयानी कही जा सकती है। पत्रों की प्रामाणिकता के आधार के रूप में कथ्य, तिथि, सन्दर्भ और भाषा को स्वीकार किया जाता है। पत्रों का लेखक किसी न किसी सन्दर्भ को लेकर पत्र लिखता है या उत्तर देता है। सामान्यतः पत्र दूसरे तक अपनी बात को पहुँचाने के लिए लिखे जाते हैं। उत्तर के रूप में लिखी गयी समस्या के निराकरण के लिये लिखे जाते हैं। जब पत्रों का उत्तर प्रति उत्तर के रूप में आदान-प्रदान नहीं होता तो लेखक को पत्र प्रामाणिक सन्दर्भ बन जाते है। प्रेमचन्द साहित्य का अपना महत्व है। प्रेमचन्द पहले उपन्यासकार थे. जिन्होंने अपने साहित्य की कथा जन-जीवन से चुनी है। कृति के भीतर कृतिकार दिखाई दे ही जाता है। उनकी कृतियों पर उनके पत्रों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब दिखाई देता हैं प्रेमचन्द की चिट्ठियों में उनके विचार और उनके व्यक्तित्व की झलक है। एक प्रकार का भोलापन है, एक तरह की सादगी है, अपने पत्रों में प्रेमचन्द पूर्णरूप से नजर आते हैं।

प्रेमचन्द द्वारा लिखी गये पत्र साहित्यिक ही नहीं बल्कि पारिवारिक, राजनीतिक एवं सामाजिक भी हैं। साहित्यिक पत्रों में उन्होंने कहानी, उपन्यास, काव्य और नाटक आदि बिन्दुओं पर पत्रों के माध्यम से बातचीत की है। पारिवारिक पत्रों में उन्होंने पारिवारिक जिन्दगी से जुड़ी समस्याओं को उठाया है। इसके साथ-साथ उन्होंने राजनीतिक एवं सामाजिक पत्र भी लिखे हैं, जिसमें उस समय की देश की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति का पता चलता है।

1. साहित्यिक पत्र

- **प्रेमचन्द के मुंशी दयानरायन निगम के नाम साहित्यिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वरा मुन्शी दयानरायन निगम के नाम जो साहित्यिक पत्र लिखे उनकी संख्या-155 है जो चिट्ठी-पत्री भाग-1 और प्रेमचन्द रचनावली खण्ड उन्नीस में प्रकाशित हुए हैं। प्रेमचन्द ने इन पत्रों के माध्यम से साहित्यिक समस्याओं को उठाया है,

- **प्रेमचन्द के जैनेन्द्र कुमार के नाम साहित्यिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा जैनेन्द्र कुमार को लिखे गये साहित्यिक पत्रों की संख्या 26 है। ये चिट्ठी पत्री भाग-दो और प्रेमचन्द रचनावली में प्रकाशित हुए हैं। इन पत्रों के माध्यम से प्रेमचन्द ने साहित्यिक समस्याओं को बताया है।

- **प्रेमचन्द के बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम लिखे साहित्यिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम लिखे गये साहित्यिक पत्रों की संख्या 15 है। जो चिट्ठी-पत्री भाग-दो और प्रेमचन्द रचनावली खण्ड उन्नीस में प्रकाशित हुए हैं। इन पत्रों में प्रेमचन्द ने अपनी साहित्यिक समस्याओं को उजागर किया है।

- **प्रेमचन्द के इम्तियाज अली 'ताज' के नाम साहित्यिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा इम्तियाज अली 'ताज' के नाम लिखे गये साहित्यिक पत्रों की संख्या 40 मिलती है। जो चिटठी-पत्री भाग-दो और प्रेमचन्द रचनावली खण्ड उन्नीस में प्रकाशित हुए हैं। जिसमें प्रेमचन्द ने अपनी साहित्यिक समस्याओं को उठाया है।

- **प्रेमचन्द के मैनेजर 'जमाना' के नाम साहित्यिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा मैनेजर 'जमाना' को लिखे नए साहित्यिक पत्रों की संख्या केवल 13 मिलती है। जो चिट्ठी-पत्री भाग दो और प्रेमचन्द रचनावली खण्ड उन्नीस में मिलते हैं। इन पत्रों ने साहित्यिक समस्याओं को उठाया है।

2. सामाजिक पत्र

- **प्रेमचन्द द्वारा मुन्शी दयानरायन निगम के नाम सामाजिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा मुन्शी दयानरायन को लिखे गए सामाजिक पत्रों की संख्या 11 मिलती है। जो चिट्ठी-पत्री भाग-1 में प्रकाशित हुए हैं। जिसमें उन्होंने सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है।

- **जैनेन्द्र कुमार के नाम सामाजिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा जैनेन्द्र कुमार के नाम जो सामाजिक पत्र मिलते हैं उनकी संख्या 8 मिलती है। जो चिट्ठी-पत्री भाग-2 में प्रकाशित हुए है।

- **बनारसीदास के नाम सामाजिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम जो सामाजिक पत्र मिलते हैं उनकी संख्या केवल 2 मिलती है। जो चिट्ठी-पत्री भाग-दो में प्रकाशित हुए हैं।

- **प्रेमचन्द द्वारा महताब राय के नाम सामाजिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा महताब राय के नाम 9 सामाजिक पत्र लिखे हैं। जो चिट्ठी-पत्री भाग दो और प्रेमचन्द रचनावली खण्ड उन्नीस में प्रकाशित हुए हैं। जिसमें उन्होंने सामाजिक विचारों को उठाया है।

- **प्रेमचन्द द्वारा हसामुद्दीन गौरी के नाम सामाजिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा हसामुद्दीन गौरी, हैदराबादी के नाम 3 सामाजिक पत्र लिखे हैं जो प्रेमचन्द चिट्ठी-पत्री भाग-दो में प्रकाशित हुए हैं। जिसमें उन्होंने सामाजिक विचारों को उजागर किया है।

- **प्रेमचन्द द्वारा रामचन्द टण्डन के नाम सामाजिक पत्र**

प्रेमचन्द ने रामचन्द्र टण्डन को केवल 2 सामाजिक पत्र लिखे हैं। प्रेमचन्द के ये पत्र चिट्ठी-पत्री भाग दो में प्रकाशित हुये हैं। जिसमें उन्होंने रामचन्द्र टण्डन को लेखकों के आर्थिक हितों की रक्षा को स्वीकार किया है।

3. राजनीतिक पत्र

- **प्रेमचन्द द्वारा मन्शी दयानरायन निगम के नाम राजनीतिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा मुन्शी दयानरायन निगम के नाम केवल 11 पत्र लिखे गये हैं। जो चिटठी-पत्री भाग-1 में प्रकाशित हुए हैं। जिसमें उन्होंने राजनीतिक चर्चा की है।

- **प्रेमचन्द के जैनेन्द्र कुमार के नाग राजनीतिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा जैनेन्द्र कुमार को केवल 1 राजनीतिक पत्र मिलता है। जो विटठी-पत्री भाग-दो में प्रकाशित हुआ है। जिसमें उन्होंने राजनीति समस्याओं को उठाया है।

- **बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम राजनीतिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम केवल 1 राजनीतिक पत्र मिलता है। जो चिट्ठी-पत्री भाग-दो में प्रकाशित हुआ है। जिसमें उन्होंने राजनीतिक समस्याओं को उजागर किया है।

- **मुमताज अली के नाम राजनीतिक पत्र**

प्रेमचन्द ने मैनेजर दारूल अशायत पंजाब के मुमताज अली के नाम केवल 1 राजनीतिक पत्र लिखा है। जो चिट्ठी-पत्री भाग-दो में प्रकाशित हुआ है।

- **दशरथ प्रसाद द्विवेदी के नाम राजनीतिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा दशरथ प्रसाद द्विवेदी के नाम केवल 1 ही राजनीतिक पत्र मिलता है। जो चिट्टी-पत्री भाग-दो में प्रकाशित हुआ है।

4. पारिवारिक पत्र

- **प्रेमचंद के दयानरायन निगम के नाम पारिवारिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा मुन्शी दयानरायन निगम को पारिवारिक समस्याओं से लिखे गए पत्रों की संख्या 112 मिलती है। जो चिट्ठी-पत्री भाग-1 और प्रेमचन्द रचनावली खण्ड उन्नीस में प्रकाशित हुए हैं। इन पत्रों में प्रेमचन्द ने अपनी साहित्यिक समस्याओं को बताया है।

- **प्रेमचन्द के शिवरानी देवी के नाम पारिवारिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा शिवरानी देवी के नाम जो पारिवारिक पत्र मिलते हैं, उनकी संख्या 7 मिलती है। जोकि 'प्रेमचन्द घर में' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुए हैं। जिसमें प्रेमचन्द ने. पारिवारिक समस्याओं पर विचार किया है।

- **प्रेमचन्द द्वारा जैनेन्द्र कुमार के नाम पारिवारिक पत्र**

प्रेमचन्द ने जैनेन्द्र कुमार को 9 पारिवारिक पत्र लिखे हैं। जो चिट्ठी-पत्री भाग-दो में प्रकाशित हुए हैं। जिसमें उन्होंने पारिवारिक या घरेलू समस्याओं को उजागर किया है।

- **प्रेमचन्द द्वारा बनारसी दास चतुर्वेदी के नाम पारिवारिक पत्र**

प्रेमचन्द द्वारा बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम 3 पारिवारिक पत्र लिखे गये। जो चिटठी-पत्री भाग-दो और प्रेमचन्द रचनावली खण्ड उन्नीस में प्रकाशित हुए हैं। जिसमें उन्होंने पारिवारिक समस्याओं को उजागर किया है।

- **प्रेमचन्द द्वारा इम्तियाज अली 'ताज' के नाम परिवारिक पत्र**

प्रेमचन्द ने इम्तियाज अली ताज को 5 पारिवारिक पत्र लिखे। जो चिट्ठी-पत्री भाग-दो में प्रकाशित हुए हैं। जिसमें उन्होंने अपनी पारिवारिक समस्याओं को उजागर किया है।

- **प्रेमचन्द द्वारा मैनेजर दारूल अशायत के नाम पारिवारिक पत्र**

प्रेमचन्द ने मैनेजर दारूल अशायत, लाहौर के नाम केवल एक पारिवारिक पत्र लिखा है, जो चिट्ठी-पत्री भाग-दो में प्रकाशित हुआ है। जिसमें उन्होंने अपनी पारिवारिक समस्याओं को उठाया है।

5. पत्रों की प्रामाणिकता

पत्रों का लेखक विशेष तिथियों में अपने पत्र लिखता है, उस तिथि के आधार पर काल सापेक्ष, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मान्यताओं को पृष्ठभूमि में रखकर विचार किया जाता है। तिथि के साथ स्थान विशेष का भी उपयोग करता है जिस पर भाषा के सन्दर्भ में विचार किया जा सकता है। सन्दर्भ अनेक प्रकार के हो सकते हैं। साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग होता है. इसलिए उसके पत्रों में इन विषयों को सन्दर्भरूप में देखा जा सकता है।

- **साहित्यक** :- उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, एकांकी, आदि।
- **आर्थिक सन्दर्भ :** निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग, और उच्च वर्ग की आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ को लेकर लिखीं गये पत्र।
- **राजनैतिक सन्दर्भः** स्वदेशीय एवं देश से इतर देशों की राजनीति, प्रजातन्त्र एक तन्त्र और अन्य राजनैतिक व्यवस्थाओं के सन्दर्भ में।
- **सांस्कृतिक सन्दर्भः**- इसके अन्तर्गत भौतिक सांस्कृतिक (खान-पान, वस्त्र, आभूषण, घर और रहन सहन तथा आध्यात्मिक सांस्कृतिक धर्म और संस्करण) को देखा जा सकता है। लगभग सभी सन्दर्भों को इन्हीं वर्गों में समाहित किया जा सकता है।

भाषा पत्रों की प्रामाणिकता का महत्वपूर्ण आधार होती है। भाषा अपनी परिवेषगत मान्यताओं को आत्मसात किये रहती है और पत्रों का लेखक परिवेश से अलग या कट कर नहीं रह सकता। या यूँ कहिए कि यदि अकेली भाषा पर ही विचार किया जाए तो उसमें उपयुक्त सारे महत्वपूर्ण बिन्दु सह समाहित हो जायेंगे।

कथ्य के आधार पर

इसमें कथ्य पत्रों का मूल आधार माना जा सकता है। जो लेखक की मानसिकता और परिवेशगत मान्यताओं को अपने आप में समाहित किये रहता है। कथ्य को निम्नलिखित वर्गों में वगीकृत किया जा सकता है-

- साहित्यिक
- राजनीतिक
- आर्थिक
- सांस्कृतिक

6. प्रेमचन्द के साहित्य में उनके पत्रों का महत्व, उपादेयता एवं प्रामाणिकता

विदेशों में महान् पुरुषों, नेताओं और साहित्यकारों के पत्रों का संकलन बड़े यत्न से किया जाता है। विशेषकर कला की दृष्टि से साहित्यकारों के पत्रों का बड़ा महत्व होता है। कारण उनके पत्र. उनकी कला के प्रति उनके विचारों तथा तत्कालीन साहित्यिक वातावरण की जानकारी में पर्याप्त सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त भी चूँकि साहित्यिकार कला का आराधक होता है, इसके लिये उसकी लेखनी से प्रसूत प्रत्येक वस्तु में कला अपना लघु रूप समेटे रहती है। पाठक के सामने जब वे पत्र आते हैं तो विभिन्न रसों का स्थायित्व प्राप्त की हुई वे सभी बातें कला के माध्यम से ही प्रकाश में आती हैं। पत्र तो उनका सीमा-नियोजन मात्र होता है।

- **पारिवारिक**

परिवार हमारे सामाजिक जीवन का मूलाधार है। परिवार में व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा समस्म सामाजिक सम्बन्धों का विकास होता है। इस प्रकार परिवार समाज की अत्यन्त महत्वपूर्ण इकाई है। यदि परिवार का आधार हटा लिया जाय तो समाज धराशायी हो जायेगा। अतः किसी भी समाज में सुधार करने से पूर्व पारिवारिक समस्याओं का निराकरण करना आवश्यक है।

- **कहानी**

प्रेमचन्द का कहानी साहित्य इतना विशाल और विस्तृत है कि उसमें समूचा एक युग समा गया है। उन्होंने न केवल हिन्दी कहानी साहित्य को समृद्ध किया और कलात्मक कौशल से परिवर्तित किया, वरन् साहित्य की सोद्देश्यता को प्रमाणित कर सामाजिक सन्दर्भों में दायित्व निर्वाह की भावना से प्रत्येक कहानीकार को प्रेरित किया तथा साहित्य को अभिनव दिशा प्रदान की। एक तरह से वे अपने में स्वयं एक कहानी युग थे, जिसमें हिन्दी कहानियों के सच्चे तत्व अंकुरित हुए, विकसित हुए और उनसे भारतीय कहानी-साहित्य में सुगन्ध आई। प्रेमचन्द युगद्दष्टा थे। उन्होंने न केवल अपने युग को देखा था, वरन् आगे आने वाले युग की सम्भावनाओं को देखा था देखा ही नहीं उन सम्भावनाओं के निर्माण में अपूर्व सक्रियता भी प्रकट की थी। प्रेमचन्द ने प्राचीन भारतीय चेतना से लेकर प्रायाः समस्त आधुनिक पश्चिमी भाव-धाराओं का अपनी लेखनी में सफल प्रयोग किया है।

- **उपन्यास**

प्रेमचन्द अपने युग के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं। उनके उपन्यासों में यदि एक ओर परम्परागत आदर्शवाद का परिचय मिलता है तो दूसरी तरफ यथार्थ जगत की व्यावहारिकता के प्रति एक संयत दृष्टिकोण मिलता है। प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास को एक नया मोड़ दिया। उन्होंने जिन समस्याओं को अपनी विविध औपन्यासिक कृतियों में उठाया वे भारतीय समाज के विविध वर्गों के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण है। नागरिक एवं ग्रामीण जीवन के व्यापक पक्षों को चित्रण करते हुए प्रेमचन्द ने मानवतावादी दृष्टिकोण की प्रशंसा की है। इस प्रकार से प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में उस समय प्रवेश कियाजब मुख्य रूप से चमत्कारिक तत्व प्रधान कहानी किस्सों की धूम थी। हिन्दी गद्य का अविकसित रूप उपन्यासों में मिलता था और शैली की दृष्टि से पिछड़ेपन का कारण था। प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास को आधुनिक रूप प्रदान करते हुए उसे एक गम्भीर और महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि दी। प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यास का जो विकास हुआ उसका मुख्य श्रेय प्रेमचन्द को ही जाता है।

- **राजनीतिक**

गाँधीजी का प्रभाव

प्रेमचन्द पर गाँधी जी के दर्शन का प्रभाव पड़ा था, मगर अन्तिम चरण तक आते-आते उनके दृष्टिकोण बदलने लगे और वह गाँधीवादी की अपेक्षा साम्यवाद की ओर झुक गए थे। गाँधीवाद की सत्य, अहिंसा और प्रेम की नीतियों को उन्होंने सिद्धान्ततः स्वीकार किया था। प्रेमचन्द ने इसे पहचानने में कोई भूल नहीं की। वे अपने मन की आँखें खोले रहे और उन्हें जब तक गाँधीवाद में यह संत्य मिला, तब तक उन्होंने अपनाया, जब उससे भी बड़ासत्य 'साम्यवाद' के दर्शन में मिला तो उन्होंने प्रगतिशील लेखक नाते उसे सर माथे पर रखा।

7. उपसंहार

प्रेमचन्द बडे विनम्र साहित्यकार थे और अभिमान उनको छू भी नहीं गया था। उन्हें इस बात का स्वप्न में भी ख्याल नहीं आया होगा कि उनके पत्र कभी निबन्ध या बातचीत का विषय बन सकते हैं। दिखावट का उनमें नामोनिशान नहीं था, इसलिये जो भी पत्र उन्होंने लिखे थे उनमें महज स्वाभाविकता पायी जाती है। पत्रों की विशेषता भी इसी बात में है कि उनमें किसी प्रकार की कृत्रिमता न हो। प्रेमचन्द के पत्र इस श्रेणी में आते हैं। जहाँ तक प्रेमचन्द की अप्रकाशित पत्रों का प्रश्न है तो अमृत राय ने खुद स्वीकार किया है कि –

मेरा अनुमान है कि यह संग्रह पूरा है, लेकिन हो सकता है कि कुछ खत इधर-उधर हो गये हो, इनका मिल जाना खुद एक चमत्कार है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द की अप्रकाशित पत्र कोई नहीं है, और यदि है तो वे कहीं अन्धकार में पड़े है। जहाँ तक उनके पत्रों के स्वरूप का प्रश्न है तो अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रेमचन्द के अपने पत्रों में साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं पारिवारिक सभी प्रकार के विचार साफ दृष्टिगोचर होते हैं। उनके कुल साहित्यिक पत्र 401 हैं। इसी प्रकार सामाजिक पत्रों की संख्या 71 मिलती है। राजनीतिक पत्रों की संख्या 18 मिलती है एवं पारिवारिक पत्रों की संख्या 155 मिलती है। जो चिट्ठी-पत्री भाग-एक, भाग-दो और प्रेमचन्द रचनावली, खण्ड-उन्नीस तथा प्रेमचन्द पत्र-प्रसंग में प्रकाशित हुई है। जिसमें उन्होंने साहित्यिक स्वरूप को उठाया है।

प्रेमचन्द साहित्य का अपना महत्व है। प्रेमचन्द पहले उपन्यासकार थे, जिन्होंने अपने साहित्य की कथा जन-जीवन से चुनी है। उनकी कृतियों पर उनके पत्रों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब दिखायी देता है। प्रेमचन्द साहित्य की उपादेयता उनके द्वारा सुझाये गए समाध् गानों में है और साथ ही उनका साहित्य भाषा भाईचारिक दृष्टि और भविष्य दर्शन के उनके सूत्रों की दृष्टि से भी उपदेय है। जहाँ तक प्रासंगिकता का प्रश्न है तो प्रेमचन्द की उन महान उपन्यासकार या कहानीकार के रूप में स्वीकार किया गया है, जो तमाम कमजोरियों और कमियों के बावजूद न केवल हिन्दी और उर्दू के अपितु विश्व के महान कथाकारों की पंक्ति में खड़े हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज भी हिन्दी और उर्दू का पाठक प्रेमचन्द के उपन्यासों और कहानियों को बड़े चाव से पढ़ता है। इस प्रकार स्पष्ट ही कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द और उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है, और उन समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने जो रास्ते दिखाए हैं उनके प्रयोग से आज भी उन समस्याओं का समाधान हो सकता है। चाहे वह समस्याएँ नारी से सम्बन्धित हो, चाहे अछूत की हो, आर्थिक शोषण की हो या फिर साम्प्रदायिक हिंसा की हो। इस प्रकार प्रेमचन्द उस श्रेणी के एक ऐसे सुलझे हुए साहित्यकार थे, जिनकी प्रासंगिकता समाज में सदैव बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. प्रेमचन्द, कर्मभूमि, पृ० 229
2. वही, कुसुम, मानसरोवर भाग-2. पृ० 18
3. वही, चिट्ठी-पत्री भाग-1, पृ० 52
4. वही, भाग-2, पृ 48
5. वही, पृ० 104
6. कथाकार प्रेमचन्द, डॉ रामदरश मिश्र, डॉ ज्ञानचन्द गुप्त नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
7. प्रेमचंद, चिट्ठी- पत्री भाग 1, प्र० 6
8. वही, पृ० 7
9. वही, पृ० 7-9
10. वही, पृ० 15
11. वही, पृ० 29
12. धीरेन्द्र वर्मा (सम्पादक), हिन्दी विश्व कोश, भाग-2, पृ० 173
13. वही, पृ० 173
14. अमृत राय (सम्पादक), गुप्त धन भाग-1, पृ० 9
15. वहीं, पृ० 9
16. अमृत राय, कलम का सिपाही, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962, पृ० 446
17. जवाहर लाल नेहरू, विश्व इतिहास की झलक, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली,1952, पृ० 596
18. प्रेमचन्द, गोदान, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, सं0 1966, वही, पृ० 137-138

19. वही, कर्मभूमि पृ० 237
20. वही, रंगभूमि, पृ० 46
21. अमृतराय, प्रेमचन्द कलम का सिपाही, पृ० 288
22. प्रेमचन्द, विविध प्रसंग, भाग-2, पृ० 46